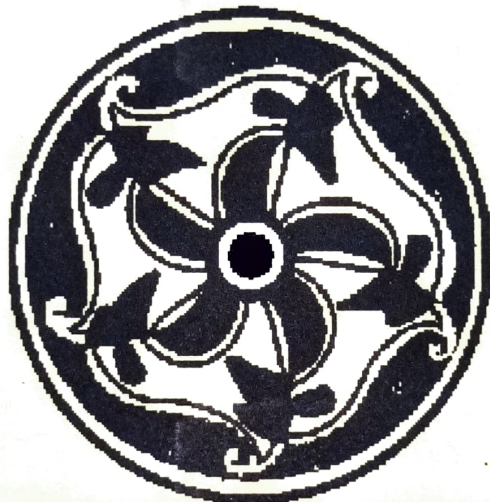


ISSN 2348-4977 Visvabharati Patrika

विश्वभारती पत्रिका



सम्पादक
मुक्तेश्वर नाथ तिवारी
छायावाद की शतवार्षिकी पर केन्द्रित

खण्ड ७२

अंक २-३-४

आषाढ २०७५ - फाल्गुन २०७५

जुलाई २०१८ - मार्च २०१९

विश्वभारती पत्रिका

खण्ड ७२ अंक २-३-४ आषाढ़ २०७५- फाल्गुन २०७५, जुलाई २०१८- मार्च २०१९

विषय-सूची

इस अंक के लेखक		४
आधुनिकता के संदर्भ में छायावादी काव्य : पुनर्मूल्यांकन	धनंजय वर्मा	७
छायावादी अभिव्यंजना का सामाजिक आधार	शशि मुदीराज	२२
सांस्कृतिक नवोन्मेष का प्रत्यक्ष वस्तु-पाठ : निराला का कविकर्म	रमेशचंद्र शाह	५७
अप्रस्तुतविधान और छायावाद	बहादुर मिश्र	६३
छायावाद में अनुभूति और कल्पना	संकटा प्रसाद मिश्र	८३
छायावाद का यथार्थ	विश्वनाथ प्रसाद	९१
पंत-काव्य : संस्कृति, भारतीयता और मूल्य-चिंतन का परिप्रेक्ष्य	प्रमोद कोवप्रत	९७
छायावाद की व्याप्ति	उमा मिश्र	१०२
छायावाद में स्त्री-अस्मिता का स्वर	रीता सिन्हा	११६
छायावादी-काव्य की सांस्कृतिक पीठिका	कृष्ण गोपाल मिश्र	१२६
जयशंकर प्रसाद के नाटकों का महाकाव्यात्मक आयाम	नर्वदेश्वर राय	१३५
महादेवी की कविता में वेदना	विजय कुमार भारती	१४०
छायावाद : रोमांटिक उत्थान की काव्यधारा	हरेकृष्ण तिवारी	१४९
विविध दार्शनिक-सिद्धांतों की संगम स्थली : छायावाद	अर्चना पाण्डेय	१५६
‘कामायनी’ में उदात्त तत्त्व	मधुछंदा चक्रवर्ती	१७१
अपनी बात	मुक्तेश्वर नाथ तिवारी	१८३

पंत-काव्य : संस्कृति, भारतीयता और मूल्य-चिंतन का परिप्रेक्ष्य

प्रमोद कोवप्रत

“संस्कृति जीवन के उन सूक्ष्मतर तत्वों की संहिता का नाम है, जिनसे मानव चेतना का संस्कार होता है। सारतः इन तत्वों का समाहार सत्य, शिव और सुंदर के त्रिक में हो जाता है। केवल सत्य, दर्शन का विषय है, केवल शिव नीति का और कला में मूलतः सुन्दर का ही माहात्म्य है परंतु संस्कृति में इन तीनों का सामंजस्य रहता है।”^१ डॉ. नगेन्द्र का प्रस्तुत कथन संस्कृति के व्यापक परिप्रेक्ष्य की ओर संकेत करता है। भारतीयता, मूल्य आदि शब्दों की व्याप्ति को आसानी से नहीं समझ सकते।

सुमित्रानंदन पंत छायावाद के महान कवि हैं जिन्होंने भारतीय संस्कृति एवं जीवन बोध को पूर्णतः आत्मसात किया है। समय-समय पर उनकी काव्य प्रवृत्तियों में भिन्न-भिन्न मोड़ देख सकते हैं। पर संस्कृति एवं भारतीय जीवन बोध के मामले में उनकी कविताएँ पुनर्पाठ की माँग करती हैं। सौन्दर्य से जीवन में पूर्णता प्राप्त होती है जो संस्कृति का प्राण सत्य है। मानव प्रेम एवं हित जहाँ है उसे ही कवि चाहते हैं। ‘युगांत’ की पंक्तियाँ सिर्फ छायावादी युग का अंत नहीं असल में पंत की सांस्कृतिक सोच यहाँ व्यक्त है। पंक्तियाँ हैं—

“जग जीवन में जो चिर महान
सौन्दर्य पूर्ण और सत्य प्राण
मैं उसका प्रेमी बनूँ नाथ
जिसमें मानव ही हो समान”^२

पंत की यह सोच भारतीयता की सोच है। जन कल्याण की भावना महत्त्वपूर्ण है। फूल हँसते हुए दूसरों को प्रसन्न रखना चाहता है और अपने हृदय की सुगंध से पूरी दुनिया को महकाना चाहता है। जब कोकिल से गाने का और पावक गण बरसाने का आग्रह करते हैं तो उसमें समाज की आकांक्षा है। जगत् के जीर्ण पत्र का द्रुत झरने का आह्वान और इस जगत में दुख और सुख का बाँटना भी बहुत महान विचार हैं। समय बदलता है, परिवेश बदलते हैं, पर सत्य, अहिंसा जैसे महिमामय मूल्य हमेशा लोगों को प्रिय रहेंगे। पंत की पंक्तियाँ हैं—

“नहीं जानता, युग विवर्त में होगा कितना जनक्षय

विश्वभारती पत्रिका



सम्पादक

मुक्तेश्वर नाथ तिवारी

फणीश्वरनाथ रेणु पर केन्द्रित

खण्ड ७८

अंक ३-४

आश्विन २०७७ - फाल्गुन २०७७

अक्तूबर २०२० - मार्च २०२१

‘मैला आँचल’ : अंधकार से प्रकाश की ओर

प्रमोद कोवप्रत

रेणु की रचना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मानवीय गंध से ओतप्रोत हैं। मनुष्य, समाज, संस्कृति, सर्वोपरि मिट्टी के प्रति आकर्षण उनको महान रचनाकार बना देता है। वे वास्तव में एक प्रतिबद्ध साहित्यकार हैं। भारत की गरीब से गरीब जनता की समस्त वेदनाएँ उनकी रचनाओं में वाणी पाती हैं। कभी भी वे कट्टर नहीं बने। उनका चिंतन उच्च कोटि का है। इस संदर्भ में उनके एक वाक्य उद्धृत करना ठीक रहेगा। वे कहते हैं- “समाज के एक-एक मोर्चे पर हमें लड़ना है यहाँ तक कि हमें अपने आप से लड़ना है, संपूर्ण क्रांति सिर्फ सरकार बदलने तक ही सीमित नहीं रह जाती। उसका अर्थ होता है एक नई जिंदगी की शुरुआत के लिए निर्मम होकर आततायियों पर प्रहार। जातिवाद भाई-भतीजावाद आदि मोर्चे पर लड़ते समय हम देख रहे हैं कि हमारे दुश्मन हमारी अपनी ही जाति के लोग, अपने ही भाई, अपने ही भतीजे हो रहे हैं। और ऐसे महाभारत के लिए अब किसी अर्जुन को समझाने के लिए किसी कृष्ण की जरूरत नहीं।”^१ जीवन के प्रति रेणु का दृष्टिकोण इन पंक्तियों में स्पष्ट होता है। अपनी तमाम कहानियों एवं उपन्यासों के माध्यम से मनुष्य की अवस्था एवं रिश्तों को गहराई से परखने का सफल प्रयास रेणु ने किया है। इस अर्थ में उनकी हर रचना एक नया प्रयोग है, एक नया अनुसंधान है।

रेणु की ख्याति ‘मैला आँचल’ से है। पहले उपन्यास से वे हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठित हो गए हैं, जैसे ‘उसने कहा था’ कहानी के द्वारा चंद्रधर शर्मा गुलेरी। सबसे बड़ा कारण यह हो सकता है कि यह भारतीय हृदय को छूने वाली रचना है। हमारी परंपरा, रूढ़ियाँ, धार्मिक क्षेत्र, जाति व्यवस्था एवं शोषण के साथ अभाव भरी जिंदगी को हाईलाइट करने वाला उपन्यास है ‘मैला आँचल’, जो हर समय प्रासंगिक होगा। ग्रामीण जीवन का जीता जागता चित्र इसमें अभिव्यक्त है। विषमताएँ, व्याकुलताएँ एवं विविध मुखी समस्याएँ इसमें अभिव्यक्त हैं। अंचल की विशेष मानसिकता को युग चेतना के विशाल कैनवास में खींचने की कला में रेणु सफल हुए हैं। पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों के स्पंदनों को अपनी संवेदना रूपी स्टेथस्कॉप से गहराई से जांचने का प्रयास रेणु ने किया है। रेणु की स्वीकारोक्ति ध्यान देने योग्य है- “इसमें फूल भी है, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चंदन भी, सुंदरता भी है,

○ वर्ष 92 ○ 1104 वॉ अंक

○ अक्टूबर 2019

मूल्य: 30 रु.

वीणा

शताब्दी की ओर अग्रसर



गाँधीजी सन् 1918



श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर की मासिक मुख पत्रिका

○ सम्पादकीय	4	बिहारी के काव्यरस में सौन्दर्य-शृंगार बोध	72
○ कविता (गाँधी जी पर विशेष)		सुभाषचन्द्र झा	
बापू / श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'	8	○ व्याकरण विमर्श	
गाँधी दर्शन / भवानीप्रसाद मिश्र	11	हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण यी-ई तथा	
बापू के प्रति / सुमित्रानन्दन पंत	12	ये-ए का प्रयोग भेद	52
चल पड़े जिधर दो डग / सोहनलाल द्विवेदी	13	प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित	
छूकर जिसको क्षिति मुक्त हुई चम्पारन की	14	○ लघुकथा	
हरिवंशराय 'बच्चन'		लौटी मुस्कान	66
लोहे को पानी कर देना ! / श्रीमती सुभद्रा कुमार चौहान	15	राममूरत 'राही'	64
एक प्रश्न / रामप्रवेश शास्त्री	17	जुगत : कड़ी पाने की	71
गाँधी / रामकुमार चतुर्वेदी 'चंचल'	18	विजयसिंह चौहान	
○ आलेख		यक्ष प्रश्न	82
सभापति का भाषण	19	डॉ. योगेन्द्रनाथ शुक्ल	
महात्मा गाँधी		○ गीत/कविता/गज़ल/दोहे	
गाँधी साहित्य का परिवेश और प्रभाव	23	हम आरक्षी	77
डॉ. विश्वास पाटील		सुखदेवसिंह कश्यप	
हमें क्षमा करना बापू	29	संवेदनहीनता	88
प्रमोद त्रिवेदी		श्याम बंसल	
गाँधी जी का पर्यावरण चिंतन	36	○ कहानी	
डॉ. डी.एन. प्रसाद		इबादत नगर (पंजाबी कहानी)	78
क्या भारत विभाजन के लिए गाँधी जी दोषी थे?	41	मूल : जगतारजीत सिंग (अनुवाद : तरनतीज)	
श्रीधर बर्वे		○ बहस	
साहित्य, गाँधीवादी मूल्य एवं वर्तमान परिदृश्य	46	साहित्य के संदर्भ में समकालीनता :	
प्रो. प्रमोद कोवप्रत		उत्तर पाठ एवं पुनरावलोकन	83
गाँधी की प्रासंगिकता?	50	डॉ. शोभा जैन	
डॉ. ओम ठाकुर		○ विरासत	
शब्द सत्ता : प्रतिबद्धता का प्रजातंत्र	54	ऐसे शुरू हुआ था 'वीणा' का प्रिंटिंग प्रेस	87
भालचन्द्र जोशी		शिवकुमार द्विवेदी	
पत्रकारिता के नीलकंठ : आचार्य शिवपूजन सहाय	58	○ रचना के बहाने	
शिवप्रसाद 'कमल'		कविताएँ सरोजकुमार की और सिर्फ उन्हीं की	89
लघुकथा का व्याकरण और		डॉ. जयकुमार 'जलज'	
कमलकिशोर गोयनका की अवधारणाएँ	61	○ पुस्तक समीक्षा	90
बी.एल. आच्छा		○ समिति समाचार	95
स्त्री विमर्श से जन्मी आधुनिक स्त्री	67	○ जनमंच	97
डॉ. कीर्ति शर्मा			

साहित्य, गाँधीवादी मूल्य एवं वर्तमान परिदृश्य

- प्रो. प्रमोद कोवप्रत

महात्मा गाँधी सिर्फ भारत के लिए नहीं, पूरी दुनिया के लिए एक आदर्श पुरुष हैं। उस महान आत्मा की 150वीं वर्षगाँठ के अवसर पर हमें पुनः सोचना पड़ता है कि हम कहाँ से कहाँ तक पहुँच गये हैं। एक ओर कभी न सूर्यास्त होने वाले अमेरिकी साम्राज्यवाद से हमने आज़ादी हासिल की तो दूसरी ओर देश आज अनेक गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है। यहाँ तक कि शंका होती है कि क्या विश्व का सबसे बड़ा जनतंत्र खतरे में है। जब हाक्कथॉन ने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन पर तर्जनी उठायी तो इस संदेह की गहराई को और बढ़ा देती है। दूसरी ओर धर्म जाति, राजनीति, जानवर, प्रदेश आदि के नाम पर लोग लड़ रहे हैं, खूब मर रहे हैं। इससे भी बड़ी भयानकता का रूप धारण कर खड़ी है गरीबी। क्योंकि सर्वे ने बताया कि देश की 51 से 53 प्रतिशत संपत्ति एक प्रतिशत लोगों के पास है और 77 प्रतिशत संपत्ति दस प्रतिशत लोगों के पास इकट्ठी हुई है। ऐसे में आर्थिक सामाजिक बराबरी की कल्पना कहाँ तक संभव है। गरीबों को और गरीब एवं अमीरों को और अमीर बनाने की नीति भूमंडलीकरण के युग में चल रही है। ऐसे भयानक समय में हम गाँधी चिंतन की महत्ता पर सोच रहे हैं।

आज का समय कठिन है। एक हद तक खतरनाक भी, गाँधी जी शांति के अग्रदूत थे। वर्तमान दुनिया अशांति एवं आतंक में जी रही है। हर कहीं हिंसा एवं खूनरेज़ी का बोलबाला है। जब विश्वशांति सपना बन रही है, तब हमें गाँधीवादी मूल्यों की प्रासंगिकता पर सोचना चाहिए। इस शांतिदूत को पहचानकर ही संयुक्त राष्ट्र संघ ने दो अक्तूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया था। गाँधी जी एक व्यक्ति से बढ़कर एक आन्दोलन थे, वे एक पाठशाला थे। उपनिवेश से लड़ने के लिए, गुलामी की जंजीरों से देश को मुक्त कराने के लिए उन्होंने सत्य एवं अहिंसा को ताकतवर हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। अपने जीवन को ही संदेश बनाना ही नहीं, दिखाना उनका ध्येय है। सत्य एवं अहिंसा के वज्रायुध के साथ वे ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अन्न शरीर-श्रम, सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी जैसे मूल्यों पर अडिग रहे। विपरीत से

राष्ट्रसेतु RASHTRASETU

Peer Reviewed / Refereed
Research Journal in Hindi

भारतीय साहित्य एवं भाषा समन्वय की
पुरस्कृत और पंजीकृत शोध पत्रिका

राष्ट्रसेतु RASHTRASETU

Peer Reviewed / Refereed
Research Journal in Hindi

भारतीय साहित्य एवं भाषा समन्वय की
पुरस्कृत और पंजीकृत शोध पत्रिका

अनुक्रम

- भारतीय साहित्य : भारतीय साहित्य की आत्मा/नर्मदा प्रसाद मिश्र 'नरम' 1-3
- साहित्य / शोध :
 - नासिरा शर्मा के उपन्यास "ठीकरे की मंगनी" में अनिव्यक्त स्त्री की बदलती मानसिकता 4-8
दिव्या ई.ए. शोध छात्रा
 - जयश्री राय की कहानियों में नारी चेतना/डॉ. हेमलता सी. पी. 9-12
 - अनुभूति के घेरे में अभिव्यक्त नारी संवेदना/डॉ. प्रीता एस. आर. 13-15
 - हिन्दी उपन्यास में विकास बना विस्थापन/डॉ. टीना 16-18
 - ओम प्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में अभिव्यक्त दलित प्रतिरोध/डॉ. शशीकला ए. वी. 19-20
 - केरल की हिन्दी कविता : एक विहंगम दृष्टि/डॉ. प्रमोद कोवप्रत 21-22

शोधपत्र प्रकाशन हेतु संपर्क कीजिये

प्रिय शोधार्थियों राष्ट्रसेतु भारतीय-साहित्य एवं भाषा समन्वय की एक मात्र विश्वविद्यालयीन शोधपत्रिका है। यह बहुभाषी और समस्त शैक्षिक विषयक भी है। ISSN द्वारा रजिस्टर्ड इस त्रैमासिक पत्रिका में अपने शोधपत्र/शोध आलेख प्रकाशित करवाकर विश्वविद्यालय की योजनाओं एवं सेवा नियमों का लाभ आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

केरल की हिन्दी कविता : एक विहंगम दृष्टि

■ प्रो. प्रमोद कोवप्रत

हिन्दी भाषा एवं साहित्य के लिए केरल का वातावरण हमेशा अनुकूल रहा है। यद्यपि यहाँ की मातृभाषा मलयालम है तो भी लगभग सभी लोग हिन्दी समझ सकते हैं, कुछ-कुछ बोतो भी पर वर्तमान समय में हिन्दी की अंतर्धारा सशक्त है केरल में। यहाँ साठ-सत्तर प्रतिशत मजदूर लोग काम कर रहे हैं, जो केरल के बाहर उड़ीसा, बंगाल, बिहार, असम, झारखंड जैसे प्रांतों से आये हैं। उनकी संपर्कभाषा हिन्दी है। साहित्य की दृष्टि से विशेषकर अकादमीय क्षेत्र से जुड़े लोग मौलिक लेखन शोध, अनुवाद, संपादन-संकलन आदि कर रहे हैं। केरल के हिन्दी साहित्य के विकास या इतिहास पर केन्द्रित ग्रंथ भी मिलते हैं।

प्रारंभिक दौर में अधिकतर रचनाएँ पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। केरल के प्रथम हिन्दी गीतकार का श्रेय त्रावन्कोर रियासन के राजा महाराज स्वानितिरुनाल (1913-1949) को प्राप्त है। संगीत, कला तथा भाषा में विशेष रुचि रखने वाले उनकी भक्तिपरक पंक्तियाँ प्रसिद्ध हैं - जो कृष्ण राज तथा श्रीपदमनाभ से जुड़े पद हैं। विश्वनाथ अय्यर के शब्दों में, "श्रीकृष्ण के विविध रूपों में मुरलीधर, गोपी चितचोर और कालीयमर्दन रूपों की कीर्ति इन्होंने अधिक गायी है। चाहे बाल-लीला हो, चाहे विरद-वार्ता या विनय-निवेदन प्रत्येक प्रसंग पर जयदेव

की सी सरसता प्रकट होती है।" केरल के प्रारंभिक दौर के हिन्दी कवियों में देव केरलीय वासुदेव पिल्लई, पी नारायण नरेन, लक्ष्मीकुट्टी देवी, भारती देवी, विमल केरलीय वी अम्मिणी, टी.के. रामन मेनोन आदि प्रमुख हैं। आनंद शंकरन माधवन के काव्य-संग्रह दीपाराधना, वर्षा, घास के फूल आदि चर्चित हैं। एन. चन्द्रशेखर नायर का देशभक्ति पूर्ण काल है हिमालय गरज रहा है। नायर का महाकाव्य है चिरजीव।

कन्नुकुषि कृष्णनकुट्टी की रागमालिका, वी. एम. गोविन्दन नबीशन की पद्य-प्रसून, एम. गणेश अय्यर की बिखरी लहरें, टी. एस. पोन्नम्मा की राजहंस आदि प्रमुख रचनाएँ हैं। एम. श्रीधर मेनोन, दामोदर प्रसाद, पी.वी. विजयन टी.के. सरला देवी, एन. रामन नायर, एन. रवीन्द्रनाथ ए. अरविन्दाक्षन, पी.के. वेणु आदि भी चर्चित कवि रहे हैं।

पी. वी. विजयन की रचना नदी को बहने दो, शहर में चीता, शब्द आदमी है आदि महत्वपूर्ण हैं। अरविन्दाक्षन के बाँस का टुकड़ा, राम की यात्रा नये संवेदन को मिथकीय आयाम देनेवाले खंडकाव्य हैं। आसपास सपने सच होने हैं, जंगल नजदीक आ रहा है आदि लगभग एक दर्जन काव्यसंग्रह उनके प्रकाशित हैं जो सीधे समय के साथ संवाद करते हैं।

एम. षण्मुखन के चारमूर्ति भवन, अधूरा मकान, सपना देखना मना है आदि वर्तमान की वास्तविकता की कविताएँ हैं।

जे. बाबू के काव्य-संग्रह उलाहन अभिव्यक्तियाँ आदि महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। एम. सी. सुवर्ण लता के मौन बोल रहा है, यादों में नजारे क्या देखे तथा मनु के हम इंतजार में है, हम बेघर हैं अर्जुन एकलव्य आदि भी केरलीय हिन्दी कविता की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं।

कौसल्या अम्माल की कविताएँ, सजयकुमार पी. एस. की बर्फ की लहरे आनंदवल्ली की बाघ्यांजली, जे. उमाकुमारी की अनंदकी आवाज, सनल कृष्णन की नदी सागर में मिलती, पी. लता की आरती, रीनाकुमारी की अक्षर पूजा, वी के सीना की सावन का मौसम तथा अन्य कविताएँ, टी.एस. हेमलता की समय समकालीन रचनाशीलता की उत्कृष्ट काव्य रचनाएँ हैं।

जी. कमलम्मा की बेडा पार करना है महत्वपूर्ण कविताओं की पुस्तक है। एम. प्रेमकुमारी की नकली दुनिया, के.जी. अण्णिकृष्णन की अलविदा वृन्दावन, नया बनाव पुराना, टी. शिवनकुट्टी की चिदम्बर के चित्र, एच. परमेश्वर की कुछ उथले कुछ गहरे, कवियूर शिवराम अय्यर की वनमाला, सुचित एन लंपी की लहरे

ISSN : 2249-9318

Refereed Research Journal

UGC Approved Journal No: 41389

वर्ष-15

अंक-14

जुलाई-दिसम्बर, 2019

अनुसंधान

छायावाद विशेषांक

सम्पादक

डॉ. राजेश कुमार गर्ग

14. स्त्री-सशक्तिकरण और महादेवी वर्मा 108
 प्रो. प्रमोद कोवप्रत
 प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय, मलापुरम
 केरल
15. असमिया भाषा में छायावादी काव्य 114
 प्रो. दिनेश कुमार चौबे
 प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग
 मेघालय
16. छायावाद और अंग्रेजी रोमांटिक कविता का तुलनात्मक अध्ययन: सैद्धांतिक पक्ष 124
 डॉ. अखिलेश कुमार शंखधर
 एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय, कांचीपुर, इंफाल
 मणिपुर
17. कवि आलोचना और छायावादी कवियों की आलोचना 130
 डॉ. शशांक शुक्ला
 एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय
 जम्मू काश्मीर
18. छायावाद : हिन्दी आलोचना की उधेड़बुन 148
 डॉ. प्रभाकर सिंह
 एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
 उत्तर प्रदेश
19. छायावाद का रचनात्मक परिदृश्य 154
 डॉ. मीनाक्षी जोशी
 पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जे.एम.पटेल कालेज, भंडारा
 महाराष्ट्र
20. छायावादी कवियों का बाल साहित्य सृजन 158
 डॉ. सुरेन्द्र विक्रम
 एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज
 उत्तर प्रदेश

स्त्री-सशक्तिकरण और महादेवी वर्मा

प्रो. प्रमोद कोवप्रत*

“किसी व्यक्ति, समुदाय या संगठन की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, लैंगिक या आध्यात्मिक शक्ति में सुधार को सशक्तिकरण कहा जाता है।..... महिला शक्तिकरण के अंतर्गत महिलाओं से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और कानूनी मुद्दों पर संवेदनशीलता और सरोकार व्यक्त किया जाता है। सशक्तिकरण की प्रक्रिया में समाज को पारंपरिक पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण के प्रति जागरूक किया जाता है, जिसने महिलाओं की स्थिति को सदैव कमतर माना है। वैश्विक स्तर पर नारीवादी आंदोलनों और यू. एन. डी. पी. आदि अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने महिलाओं के स्वतंत्रता और न्याय के राजनीतिक अधिकारों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। महिला सशक्तिकरण बौद्धिक स्तर पर महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें और सशक्त बनाने की प्रक्रिया है।”

कानून की दृष्टि से बराबरी प्राप्त होने के बावजूद भी स्त्रियों की स्थिति पूर्ण रूप से सुधरी नहीं है। 21वीं सदी में अब तक स्त्रियों का निरंतर शोषण किया जाता है। बाजारीकरण कई दृष्टियों से हो रहा है। स्त्री भी उससे मुक्त नहीं। शिक्षा प्राप्ति के बावजूद भी स्त्रियों की अवस्था में पर्याप्त और वांछनीय बदलाव नहीं आए हैं। आज भी जिस प्रकार का वर्चस्व हमारे समाज में चल रहा है, उसी से पूर्ण रूप से मुक्त होना स्त्री के लिए संभव नहीं हो पाया। संविधान द्वारा बराबरी प्राप्त होने पर भी समाज में, मुख्य धारा में, बराबरी प्राप्त करना एक कठिन अभ्यास बन रहा है। दुनिया भर में बहुत सारे आंदोलन हुए हैं, संगठन हुए हैं, और समता के लिए आवाज बुलंद हुई है। विश्व के भिन्न-भिन्न भाषाओं के साहित्य में स्त्री को काफी जगह मिली है। यह जागृति और सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण और आशाजनक प्रयास है।

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने स्त्री चिंतन की दिशा में काफी योगदान दिया है। सिमोन द बोउवर की कृति ‘द सेकेंड सेक्स’, मेरी वोल्स्टोन क्राफ्ट की ‘विडिकेशन ऑफ दि राइट्स ऑफ विमेन’, जॉन स्टुवर्ट मिल की ‘सब्जेक्शन ऑफ वुमेन’, मेरी एल्लन की ‘थिंकिंग एबाउट वुमेन’, कैट मिलेट की ‘सेक्सुअल पॉलिटिक्स’, जमेन ग्रियर की ‘द फिमेल युनेक’ आदि पश्चिमी रचनाकारों की महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं, जिनके माध्यम से स्त्रियों में जागृति एवं शक्ति पैदा करने का गंभीर प्रयास किया गया है।

भारत में स्त्रीवादी चिंतन की समृद्ध परंपरा मिलती है। महादेवी वर्मा की ‘शृंखला की कड़ियाँ’, राधा कुमार की ‘स्त्री संघर्ष का इतिहास’, प्रभा खेतान की ‘उपनिवेश में

* प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय, मलापुरम जिला
केरल

Vol.11 Issue:1, January 2021



Government Arts & Science College, Kozhikode

RESEARCH
JOURNAL

Exclusion Marginalisation Dispossession

Editor: Dr. Sheeba Divakaran

Mystique of Stardom and Making of a Celebrity Indu M. S.	112
Education and Upward Social Mobility: A Study of Malayalam Novel Manu Madhav	117
The Subaltern Voice of The Mahabharata-Hidimba Puja Sarkar	131
Role of Digital Media Advertising on Healthcare Awareness and Behavioural Changes in Public in India during Covid-19 Pandemic Shamshana V. C. & Dr. Sravana K.	148
संविधान, अधिकार और दलित कविता डॉ. प्रमोद कोवप्रत	164
एल. जी. बी. टी. क्यू एवं मानवाधिकार से वंचित किन्नर तीसरी ताली के विशेष संदर्भ में । डॉ. प्रिया. पी.	174
ट्रांसजेंडरों की हाशियेकृत ज़िंदगी पर एक नज़र डॉ. राधामणि. सी	180
'अक्षयवट' में चाणक्य – पुनर्विचार डॉ. ऐडा मानुवेल	189
Book Review എതിർപ്പിലൂടെ ഡോ. ഷീബാദിവാകരൻ	193
List of Contributors	204

संविधान, अधिकार और दलित कविता

डॉ. प्रमोद कोवप्रत

सारांश

आज अस्मिता विमर्शों का समय है। उसमें दलित विमर्श दलित स्वत्व को लेकर प्रस्तुत है। साथ ही उत्पीड़न, यातना तथा अधिकार की बात भी करता है। संविधान प्रदत्त अधिकारों तथा मानव अधिकारों से दलित समुदाय एक हद तक वंचित है। संविधान के विविध अनुच्छेदों में कई अधिकारों की चर्चा है। इन अधिकारों से वंचित दलित लोगों की चर्चा हिंदी दलित कविता करती है। समानता, स्वतंत्रता, भेदभाव का अंत, छुआछूत का अंत आदि आज भी कई लोगों के लिए सपने जैसे हैं। दलित कविता व्यक्ति के अधिकारों की चर्चा करती है, साथ ही उसके उल्लंघन की भी। वह दलित मुक्ति का सपना दिखाती है और अमानवीयता के खिलाफ आवाज़ उठाती है। बीज शब्द: संविधान, अधिकार, अनुच्छेद, दलित कविता, अस्पृश्यता, स्वतंत्रता, समता, हाशियेकृत, वंचित, शोषण, अस्मिता

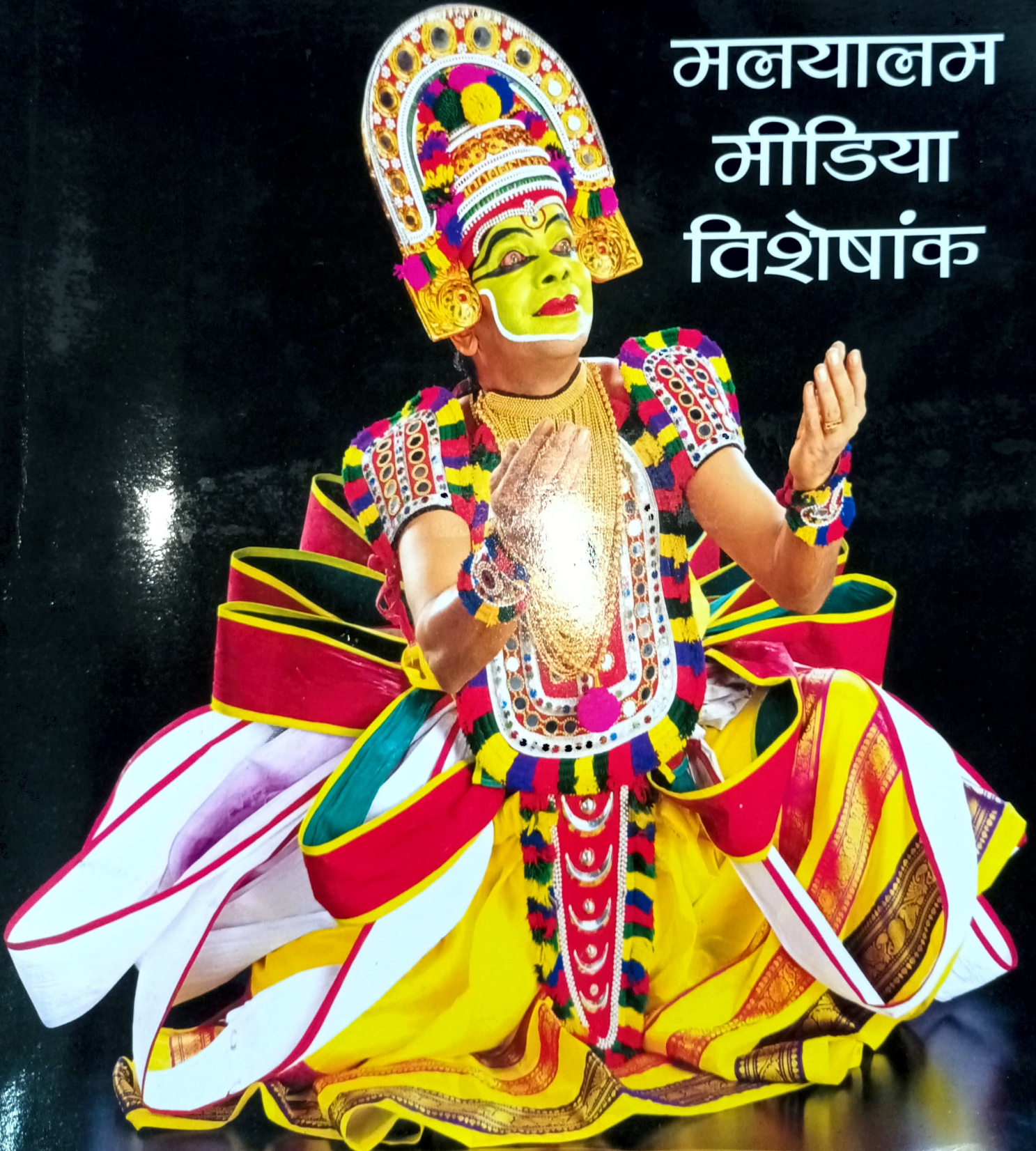
भारतीय संविधान विशाल है। उसमें व्यक्ति को बहुत सारे अधिकार प्रदान किये गये हैं। संविधान के भाग तीन मौलिक अधिकारों से संबंधित है। विभिन्न अनुच्छेदों में नागरिकों को प्राप्त अधिकारों का उल्लेख है। भाग तीन में अनुच्छेद 12 से मौलिक अधिकार संबंधी चर्चा है। अनुच्छेद 14 से 19 तक में यह स्पष्ट किया है कि प्रत्येक नागरिक के मौलिक अधिकार क्या क्या हैं। 14 वॉ अनुच्छेद सभी नागरिकों को विधि के समक्ष समता का अधिकार प्रदान करता है। अनुच्छेद 17 में अस्पृश्यता के अंत की बात बतायी है। अनुच्छेद 19 में छह मौलिक स्वतंत्रता के अधिकार के बारे में बताया है।

दिसंबर, 2019 सहयोग राशि ₹ 100 || | जनसंचार के सरोकारों पर केन्द्रित त्रैमासिक पत्रिका

ISSN 2249-0590

मीडिया विमर्श

मलयालम
मीडिया
विशेषांक



मीडिया विमर्श

वर्ष-14, अंक-52-53, जुलाई-दिसम्बर 2019 (संयुक्तांक)

वेब पेज - mediavimarsh.page



मानद सलाहकार संपादक

विश्वनाथ सचदेव, अष्टभुजा शुक्ल

अतिथि संपादक

डॉ. सी.जयशंकर बाबु

संपादक

प्रो. श्रीकांत सिंह

संपादक मंडल

डॉ. गोपा बागची, डॉ. सुमद्रा राठौर, डॉ. आरती सारंग

कार्यकारी संपादक

प्रो. संजय द्विवेदी

मो. 09892598888

मुख्य प्रबंध संपादक

अरविंद तिवारी

प्रबंध संपादक

प्रभात मिश्र, शीतलानंद तिवारी

समस्त पत्र व्यवहार का पता

428-रोहित नगर, फेज-1, भोपाल-462039 (मप्र)

मोबाइल : 09893598888

E-mail: mediavimarsh@gmail.com

कवर पेज फोटो आभार सहित : केरल टूरिज्म

सहयोग राशि

यह अंक : ₹ 100, वार्षिक : ₹ 200, (व्यक्तिगत) : ₹ 400 (संस्थागत)

मनीआर्डर, ड्राफ्ट या चेक मीडिया विमर्श-भोपाल के नाम से ही भेजे। बाहर के चेक में 40 रुपये अतिरिक्त जोड़ें।

समस्त पद अवैतनिक, रचनाओं का दायित्व रचनाकारों पर।

किसी भी विवाद का जूरिसडिक्शन रायपुर होगा।

मुद्रक एवं प्रकाशक भूमिका द्विवेदी द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 37, प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित कराकर एम.आई.जी.- 37, हाउसिंग बोर्ड कालोनी, कचना, रायपुर (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित।

संपादक : श्रीकांत सिंह

मीडिया विमर्श

जुलाई-दिसम्बर 2019



इतिहास-विकास

प्रसीता पी.	11
डॉ. रजनीश कुमार मिश्र	14
डॉ. सूर्या बॉस	19
डॉ. शबाना हबीब	21
अश्विन आर.एस.	25

साक्षात्कार

डॉ. एम.पी.पद्मनाभन	71
मणिकण्ठन आचारी	74
अनीक कुमार टी.के.	76
सुरेश उन्नीथन	82
अभिलाषा मोहनन	86

पत्रकारिता

प्रो. के.वनजा	27
डॉ. जे.रामचंद्रन नायर	32
सुप्रिया ई.	38

स्त्री शक्ति

फसीला एम.	41
डॉ. लीना बी.एल.	45
डॉ. सुप्रिया पी.	49
विजया चंद्रन	54

सिनेमा

प्रो. प्रमोद कोवप्रद	90
शाली पद्मावती पी.	92
डॉ. पी. प्रिया	95
डॉ. रंजित एम.	100
डॉ. के. वत्सला 'किरण'	104
अमर्था ए. नायर	109
डॉ. डी.रेजी कुमार	114
जॉबिन फ्रांसिस एंड डॉ. बी बेनसन	118

मूल्यांकन-विश्लेषण

प्रो. मोहनन एन.	56
पिजु एस.जी.	59
डॉ. पी.आर. हरीन्द्र शर्मा	61

साहित्य और मीडिया

रम्या वी	65
रेशमी एस.	67

शोध-पत्र

गीता कुमारी	147

श्रद्धांजलि

गिरीश कर्नाड	152
जयकृष्ण गौड़	154

रेडियो-टेलीविजन

डॉ. रंजित रविशैलम	121
क्रिस्टलिन मेरी तोमस	123
सी.श्रीवैष्णवी	125

वेब मीडिया

डॉ. सी.जयशंकर बाबु	128
ए.राधिका एवं डॉ. वी.आम्बेडकर	132

पुस्तक समीक्षा

संतोष रंजन	136
फिरदौस खान	139
प्रो. संजय द्विवेदी	141
लोकेन्द्र सिंह	144
मीडिया विमर्श डेस्क	146
लोकेन्द्र सिंह	157



मलयालम फिल्मों की विकास-यात्रा

भारतीय फिल्मों के इतिहास में मलयालम फिल्मों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मलयालम फिल्म शताब्दी की यात्रा में है। मलयालम में पहले पहल मूक फिल्म का प्रदर्शन हुआ था। सन 1928 में। जे.सी. डानियाल द्वारा निर्मित और निर्देशन की गयी 'विगतकुमारन' को इसका प्रथम निर्मित श्रेय जाता है। फिर पाँच साल के बाद मलयालम उपन्यासकार सी.वी.रामन के प्रसिद्ध उपन्यास के आधार पर एक फिल्म बनायी गयी, पर पूर्णता इसमें नहीं ला पाये। आर. सुंदरराज ने इसका निर्माण किया और वाई. वी. राव ने निर्देशन किया। पर निर्माता एवं उपन्यास के प्रकाशकों के बीच मुकदमा चलने की वजह एक ही प्रदर्शन से फिल्म पर प्रतिबंध लगाया गया।

पहली बार मलयालम फिल्मी जगत में आवाज के साथ फिल्म आयी, उसका नाम है 'बालन'। इसका प्रदर्शन 1938 में होता है। इसका निर्माण टी.आर. सुंदरम और निर्देशन एस. नोटामणि ने किया। इसी फिल्म के पटकथाकार एवं गीतकार मुतुकुलम राघवन पिल्लै मलयालम फिल्म का पहला पटकथाकार और गीतकार हैं। फिर सारी फिल्म आवाज के साथ ही बनायी गयीं। 'ज्ञानाबिका' फिल्म 1940 में आयी थी। 1949 में 'वेल्लिनक्षत्रम' नामक फिल्म आयी। इसके निर्देशक एफ.जे.बेय्स एक जर्मन थे। इसी समय में 'नल्ला तंका', 'स्त्री', 'शशिधरन', 'चेच्ची', 'प्रसन्ना', 'चन्द्रिका' आदि फिल्म आयीं।

1950 के आसपास काफी चर्चित एक फिल्म है 'जीवित नौका', 1951 में निकली इस फिल्म का नायक तिव्कुरिशी सुकुमारन नायर थे जो मलयालम फिल्म के सुपर स्टार बन गये। इसी वर्ष में कई फिल्म आयीं। 'नवलोकम', 'वनमाला', 'याचकन', 'केरल केसरी' आदि इस समय की फिल्म थीं। इस समय कई फिल्म नयी आयीं। प्रेमनसीर का आगमन इसी समय में होता है। वे काफी समय तक सुपरस्टार रहे। सन 1954 में 'नीलकुयिल' नामक फिल्म का आना महत्वपूर्ण है। निदेशक थे रामु कारियाट और पी. भास्करन। इसी प्रकार एक चर्चित फिल्म

है 'न्यूज पेपर बॉय'। सन 1955 में आयी इस फिल्म को भारत की पहली नियोरियलिस्टिक फिल्म की ख्याति प्राप्त है। कई कहानी और उपन्यास इस दौर में फिल्म बनाये गये। 'स्नेहसीमा', 'नायर पिडिच्चा पुलिवाल', 'पाडात पैंकिलि', 'रंटिडडूडिषि', 'उम्माचु', 'चतुरंगम' आदि इस समय की काफी चर्चित फिल्म हैं।

मलयालम की पहली रंगीन फिल्म का श्रेय 1961 में प्रदर्शित 'कंटम बेच्चा कोट' को प्राप्त है। इसका निर्माण और निर्देशन टी.आर. सुंदरम ने किया। पी. केशवदेव के उपन्यास के आधार पर 'ओटयिल निन्नु' फिल्म और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित तकषी के 'चेम्मीन' उपन्यास के आधार पर 'चेम्मीन' फिल्म का निर्माण हुआ। 'चेम्मीन' फिल्म को 1965 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा सुवर्ण चक्र पुरस्कार प्राप्त हुआ। 'भार्गवी निलयम', 'इरुटिन्टे आत्मावु', 'मुरप्पेण्णु' आदि इस समय की चर्चित फिल्म रही हैं।

मलयालम के ही नहीं, विश्व के ही महान निदेशक अडूर गोपालकृष्णन का पदार्पण 'स्वयंवरम' फिल्म के माध्यम से 1972 में होता है। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह चर्चित रही। इसी प्रकार ज्ञानपीठ पुरस्कृत कथाकार एम.टी.वासुदेवन नायर की फिल्म 'निर्माल्यम' 1973 में आती है। उन्होंने इसका निदेशन किया। राष्ट्रीय पुरस्कारों से इसका सम्मान हुआ। जी.अरविन्दन, के.जी.जोर्ज, भरतन, पदमराजन आदि चर्चित निदेशक एवं फिल्मकर्मी थे।

के.जी. कुमारन की अतिथि, जी.एस.पणिक्कर की 'एकाकिनी', राजीवनाथ की 'तणल', अरविन्दन की 'कांचन सीता', अडूर गोपाल ण्नन की 'कोडियेटम', एम.टी.वासुदेवन नायर की बंधनम् आदि इस समय की चर्चित फिल्म हैं। भरतन और पदमराजन के द्वारा निकली 'रतिनिर्वेदम' काफी हलचल मचाने वाली फिल्म थी। 1978 में मलयालम की पहली सिनेमास्कोप फिल्म 'तच्चोली अंबु' आयी। मलयालम फिल्मी क्षेत्र में काफी बदलाव इस समय आये। नये-नये निदेशकों का आगमन